National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 583-585

व्यक्तित्व एवं कीर्तित्व के धनी डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

कादाम्बिनी सिंह
एम. ए. इतिहास, नेट, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के पूर्वज सर्वपल्ली गाँव में रहते थें। वहाँ से यह परिवार आजीविका की खोज मे 'तिरूपती' गाँव में आ गया था। यह लोग जाति से ब्राहमण थें। यह गाँव मद्रास शहर से लगभग साठ किलोमीटर दूर था। यह सैकडों वर्षो से हिन्दुओं के लिए धार्मिक स्थल का महत्व रखता था। इनका जन्म 5 सितम्बर 1888 ई0 को इसी परिवार में हुआ था। यह बालक अपनी माता की दूसरी सन्तान था। आप 5 भाई व एक बहन थे। डॉ0 राधाकृष्णन् के माता–पिता सम्पन्न और धनाढ्य नहीं थें परन्तु सर्वथा अभावग्रस्त भी नहीं थें।

राधाकृष्णन् के पिता श्री वीर स्वामी उय्या पुरोहिताई का कार्य करते थे और इनके साथ–साथ उस समय के ब्राहमण पुरोहितों के समान शिक्षक का भी कार्य करते थें। इस प्रकार धर्म की भावना, धर्मानुराग और ईश्वर भक्ति डॉ0 राधाकृष्णन् को विरासत में मिली। उनके माता–पिता दोनों ही स्वभाव के मृदुल और उदार थे। अतिथि सेवा और सादगी उनके अन्दर कूट–कूट कर भरी थी किन्तु कट्टरपंथी विचार उनसे कोसो दूर थें।

शिक्षा काल

बारह वर्ष की अवस्था तक डॉ0 राधाकृष्णन् ने तिरूपति गाँव में ही रहकर शिक्षा ग्रहण की। अपने पिता जी से ही इन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। 8 वर्ष की अवस्था में बालक को लूथर मिशन हाईस्कूल में भर्ती किया गया जहाँ 4 वर्ष पढ़ने के पश्चात् श्री राधाकृष्णन् जी को मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज में भर्ती कराया गया। इसी कॉलेज में रहकर इन्होंने जो प्रबन्ध लिखा वह वेदान्त से सम्बन्धित था।

बी0ए0 में प्रवेश लेने के समय ये विषय चयन के सम्बन्ध में असमंजय में थें, उस समय उनके चचेरे भाई इन्हें दर्शन लेने के विषय में सलाह दी। उनके समय में विद्वान डॉ0 हॉग ने डॉ0 राधाकृष्णन् के सम्बन्ध में जो मत व्यक्त किया इसके लिए भविष्य में होने वाले एक महान. दार्शनिक का प्रमाण. से एम0ए0 करने के बाद यह तरूण विद्यार्थी मद्रास गया। यहाँ वे मद्रास क्रिश्चियन कालेज में भर्ती हुए। इस समय कालेज में उनके सह अध्यापकों में दक्षिण में अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति थें जैसे कानून के दक्षिण में अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति थें। जैसे कानून के प्रसिद्ध स्व0 अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर भारतीय संविधान निर्माण करने वाली कमेटी के आप प्रमुख सदस्य थे तथा मद्रास सरकार के एडवोकेट जनरल थें। प्रो0 टी0के0 दुरयी, स्वामी अय्यर व एम0 सुल्बाराव अय्यर। यह तीनों ही अपने कालेज जीवन के अभिन्न मित्र रहें।

शिक्षा में प्रवेश

सन् 1908 में आप मद्रास में प्रेसीडेन्सी कॉलेज में केवल 20 वर्ष की अवस्था में दर्शन शास्त्र व तर्क शास्त्र के उपाध्याय नियुक्त हुए। मद्रास प्रान्त की शिक्षा सेवा में प्रवेश पाने के बाद आपके लिए एल0टी0 होना आवश्यक हो गया। अतः टीचर्स कालेज सईदापेट में सन् 1910 का वर्ष गुजारा।

राधाकृष्णन् जी ने कालेज में दर्शन के साथ–साथ गणित विषय भी लिया था। सन् 1911 में अपने एम0ए0 की उपाधि भी प्राप्त की। सन् 1911 में आपकी कालेज की शिक्षा समाप्त हो गयी। आपने सभी परीक्षाएं विशिष्ट योग्यता के साथ उत्तीर्ण की।

वैवाहिक जीवन

उस समय की प्रथा के मुताबिक राधाकृष्णन् जी का विवाह भी छोटी आयु में हो गया।

डॉ0 राधाकृष्णन् मैसूर में

ये प्रेसीडेन्सी कॉलेज मद्रास में सन् 1908 से 1917 तक रहे। इन 8 वर्षो में छात्रों को पढ़ाने के अतिरिक्त विदेशी पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखने का ताता इस शिक्षक ने बाँध दिया। दार्शनिक जगत में एक नये तारे का जन्म हुआ हैं। ऐसा अनुभव किया जाने लगा । मैसूर के योग्य तथा प्रसिद्ध इंजीनियर दीवान सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की दृष्टि भी इधर आकर्षित हुयी। उन्होंने सन् 1918 में इस युवा विद्वान को अपने रियासत में बुलाकर महाराज कालेज मैसूर में दर्शन के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया। डॉ0 राधाकृष्णन् यहाँ पर 1921 तक रहें। (इस विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1916 में हुयी थी।)

डॉ0 राधाकृष्णन कलकत्ता विश्वविद्यालय में

सर आशुतोष मुखर्जी भारत के एक महान शिक्षाशास्त्री हुए हैं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय को ज्ञान विज्ञान का एक भव्य मन्दिर बनाना चाहते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेण्ट की स्थापना सर आशुतोष मुखर्जी ने ही की थी। वहाँ एक पीठ जार्ज पंचम प्रोफेसर ऑफ फिलॉस्फी की थी। इनके रिक्त स्थान पर डॉ0 राधाकृष्णन् को नियुक्त किया गया। इस बारे में एक रोचक बात यह हैं कि कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रोफेसर राधाकृष्णन् की योग्यता स्वीकार करने पर भी भारत मंत्री ने प्रो0 राधाकृष्णन् इंडियन एजूकेशन सर्विसेज में लेना स्वीकार किया। इस ख्याति व नियुक्ति के बाद ही सहकारी प्रशिक्षण संस्थान राजमुंदरी में अवर प्रोफेसर नियुक्त किया गया। कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उनका सन् 1926 में ब्रिटिश साम्राज्य के विश्वविद्यालय की कॉन्फ्रन्स को पोस्ट ग्रेजुएट काउंसिल इन आर्ट का सन् 1927, 1928 व 1930 में अध्यक्ष चुना गया। इसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होने के नाते प्रोफेसर राधाकृष्णन् अन्तर्राष्ट्रीय फिलॉस्फी कॉंग्रेस हावर्ड विश्वविद्यालय में सम्मिलित हुए। यहाँ आप के भाषणों का अमेरिका में बहुत प्रभाव पडा। अमेरिका ने आपके रूप में स्वामी विवेकानन्द के पुनरोदय को देखा।

डॉ0 राधाकृष्णन् आन्ध्र विश्वविद्यालय में

आन्ध्र विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1926 में हुयी थी। इसके प्रथम वाइस चांसलर सी0आर0रेड्डी ने राजनीतिक कारणों से त्याग पत्र दे दिया था। उनके द्वारा रिक्त किये गये स्थान की पूर्ति हेतु डॉ0 राधाकृष्णन् का नाम प्रस्तावित किया गया। सीनेट ने प्रचण्ड बहुमत से उनको आन्ध्र विश्वविद्यालय का कुलपति चुना। मई 1931 में डॉ0 राधाकृष्णन् ने अपना कार्यभार संभाला। यहाँ कुलपति होते हुए भी वे कलकत्त विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बने रहें। राष्ट्रसंघ की बौद्धिक सहकारी समिति के आप सदस्य थे अतः जेनेवा यदा कदा जाना पडता था। प्रोफेसर राधाकृष्णन् की क्षमता शक्ति और सामर्थ्य का यहाँ अद्भुत रूप से परिचय मिला। उनके चलते ही सम्भवतः उस समय में आन्ध्र विश्वविद्यालय शिक्षा व अनुसंधान का केन्द्र हो गया।

देखा गया हैं, जब किसी का उत्कर्ष होता हैं तो बराबर उत्त्रोत्तर होता ही रहता हैं। प्रोफेसर ऑक्सफोर्ड में स्पालडिंग चेयर आफ ईस्टर्न एण्ड एथिक्स के प्रोफेसर थें। जनवरी से जून तक वे इग्लैण्ड में रहते थें। एक ही व्यक्ति एक ही समय में दो महादेशों के दो विश्वविद्यालय में प्रो0 हो वह एक अपूर्व बात थी। उनकी अगाध विद्वता ही इस अपूर्व स्थिति का कारण थी। सन् 1932 से 1941 तक यह क्रम चला फिर दूसरे महायुद्ध के कारण यह तारतम्य टूट गया।

डॉ0 राधाकृष्णन् हिन्दू विश्वविद्यालय में

हिन्दू विश्वविद्यालय महामना मदन मोहन मालवीय जो कि शान्ति व भक्ति का प्रतीक हैं । महात्मा मालवीय जी ने महात्मा गाँधी के परामर्श पर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को हिन्दू विश्वविद्यालय में पूर्णतः अवैतनिक होकर कार्य करना स्वीकार किया। सन् 1939 में सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाते थें, काशी में विश्वविद्यालय का प्रबन्ध देखते थें। सन् 1939 व 1940 में वे कलकत्ता, आक्सफोर्ड व काशी तीनों जगहों पर घूमते थे। डॉ0 राधाकृष्णन् ने हिन्दू विश्वविद्यालय की अनुपम सेवा की। यह आत्मार्पण का एक अपूर्व उदाहरण हैं। सन् 1939 और 1948 तक आप इस विश्वविद्यालय के कुलपति रहें। यहाँ आपकी प्रबन्ध कुशलता अभिनन्दनीय थी।

डॉ0 राधाकृष्णन् आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में

भारत जब स्वाधीन नही था तब एक भारतीय था, जिसके नाम के आगे कोई विदेशी डिग्री नहीं थी, सन् 1926 में 'आक्सफोर्ड के मैनचेस्टर कॉलेज' में जीवन का हिन्दू दृष्टिकोण पर व्याख्यान देना और वह भी धोती व पगड़ी पहने, क्या भारत की आत्मिक विजय सूचित नहीं करता था? कुलगुरू राधाकृष्णन् के व्याख्यानों ने विश्व के समक्ष भारत का एक भिन्न स्वरूप पेश किया। यह पहला मौका था, जब विदेशी अपनी समझने योग्य भाषा में एक भारतीय के द्वारा निर्मित भारत का चित्र देख रहे थें। महाकवि गेते, दार्शनिक कांट और मैक्समूलर ने भारत का महान तो बताया था पर मोहक व आकर्षक भी हैं, यह कुलगुरू राधाकृष्णन् ने ही बताया था।

'व्याख्यान माला' आपके दिये व्याख्यानों को सुनकर दि हिवर्ट जनरल के सम्पादक डॉ0 जैक्स ने कहा :– ''भारत से बाहर हमारे विद्यालय में सर्वप्रथम व्याख्यान देकर आपने हमारा गौरव बढ़ाया हैं।''

ऑक्सफोर्ड में रहते हुए सन् 1936 में एक बार डॉ0 राधाकृष्णन् के मन में आया, क्या भारत में कैब्रिज विश्वविद्यालय के सदृश्य विश्वविद्यालय स्थापित नही हो सकता । बातचीत आगे बढ़ी अनुभव, परम्परा और साधनों का अलीगढ़ में परीक्षण का जिक्र आया। भारत का जोर उन दिनों विश्वविद्यालयों की शिक्षा के बदले प्राथमिक शिक्षा पर था। माननीय गोखले का प्रारम्भिक शिक्षा विधेयक स्वीकार नहीं हुआ था।

ऑक्सफोर्ड में रहते हुए डॉ0 राधाकृष्णन् ने स्पष्ट रूप से अनुभव किया था कि दोनों के विश्वविद्यालय के जीवन और वातावरण में कितना अन्तर हैं। उनका स्वप्न आज भी अधूरा हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह हैं कि प्रोफेसर राधाकृष्णन् ने भारत के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की आवश्यकता अनुभव की, ऑक्सफोर्ड की नहीं। आधुनिकता के पोषक राधाकृष्णन् इससे भिन्न क्या सोच सकते थें? स्वाधीन भारत के प्रथम शिक्षाशास्त्री मौलाना आजाद ने राधाकृष्णन् की रिपोर्ट प्रकाशित की। यह रिपोर्ट वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था का आधार हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना इस कमीशन की सिफारिश का फल हैं।

आयोग के शब्दों में :– हम न्याय, स्वतन्त्रता, समानता एवं बन्धुता की प्राप्ति द्वारा प्रजातन्त्र की खोज में संलग्न हैं अतः हमारे विश्वविद्यालयों को अनिवार्यताः इन आदर्शो का प्रतीक एवं संरक्षक होना चाहिए।

जीवन के 40 वर्ष '1908–1948' तक उन्होनें शिक्षा देने या शिक्षण संस्था का प्रबन्ध करने में बिताया । शिक्षा आयोग का कार्य समाप्त होने के बाद और उपराष्ट्रपति चुने जाने से पहले राधाकृष्णन् सन् 1950 में मास्को में राजदूत नियुक्त किये गये । सोवियत रूस व भारत के मध्य उस समय मैत्री नहीं थी विश्व में तनाव (शीत युद्ध) का वातावरण था। सोवियत रूस भारत को ब्रिटेन का एक अनुवर्ती राष्ट्र मानता था। ब्रिटिश कॉमन वेल्थ में रहने वाले भारत को यह पूर्ण रूप से स्वतन्त्र मानने को तैयार नही था । इस कारण भारत को विश्व शान्ति का केन्द्र बनाकर वे विश्व में अपने सपनों का एक मानव समाज के निर्माण करने का यत्न करके विश्व सरकार की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योग दे रहे थे । दुर्भाग्य से सन् 1962 के प्रबल चीनी आक्रमण में राष्ट्रपति के सपनों को साकार होने की संभावना को धूमिल कर दिया। चीनी आक्रमण के बाद से और विशेषता श्री नेहरू जी के बाद से राष्ट्रपति का शासन नीति के निर्माण में प्रभाव निरन्तर बढ़ता गया।

भारत का यह सौभाग्य था कि उसको डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के बाद ऐसा तत्वदर्शी राष्ट्रपति मिला जो अपने जीवन व कर्म से महर्षि वशिष्ट की याद दिलाता हैं । सन् 1967 तक वह इस पद पर आसीन रहे इसके बाद का जीवन उन्होंने दर्शन की सेवा में बिताया। डॉ0 राधाकृष्णन् अनुपम व अतुलनीय व्यक्ति थे। वे वस्तुतः सौन्दर्यपूर्ण बसंत थे और उनके विषय में व्हीलर की उक्त पंक्तियां कही जा सकती हैं :–

''अंतः करण से उत्पन्न सौन्दर्य कुछ भी उसमें अभाव नहीं । संस्कृति व कार्य दोनों का वहाँ संयोग हैं, हार्दिक, शिष्टता, विनम्रता व प्रेम वहाँ भरपूर हैं, आत्म विश्वास और आत्म आश्रिता की वहाँ पूर्ण शान्ति हैं। मास्कों में राधाकृष्णन् के राजदूत नियुक्त होने का विशेष अर्थ था। वहाँ वे पूर्णतः सफल राजदूत के रूप में विश्व के समक्ष आयें।'

डॉ0 राधाकृष्णन् उपराष्ट्रपति के पद पर

भारत के नवीन संविधानके अधीन सार्वजनक वयस्क मताधिकार के आधार पर पहला निर्वाचन सन् 1952 में हुआ। इसी वर्ष डॉ0 राधाकृष्णन् निर्विरोध भारत के उपराष्ट्रपति चुने गये। 11 मई 1962 तक इस पद का गौरव आपने बढाया । इसके साथ आपने दिल्ली विश्वविद्यालय का कुलपति होना भी स्वीकार किया। उपराष्ट्रपति डॉ0 राधाकृष्णन् दिल्ली की राजनीति पर नैतिक स्काई स्क्रैपर के समान छाये रहें। इसके साथ ही सांस्कृतिक दूत की भाँति भी

उन्होंने 10 वर्ष कार्य किया।

डॉ0 राधाकृष्णन् एक दार्शनिक राष्ट्रपति

इतना मृदु जीवन हैं इसका, और सभी तत्वों का ऐसा मधुर समन्वय, प्रकृति स्वयं ही खडी कह रही सारे जग से, यह हैं, एक वास्तविक मानव। 12 मई 1962 भारतीय इतिहास में ही नहीं अपितु विश्व इतिहास में भी एक संस्मरणीय महत्वपूर्ण दिवस माना गया। '31' तोपो' की सलामी के मध्य विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक, राजनीतिज्ञ डॉ0 राधाकृष्णन् ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक गणराज्य भारत के राष्ट्रपति पद की शपथ ली। आपके भारत के राष्ट्रपति चुने जाने पर प्रसिद्ध तत्वज्ञानी लॉर्ड बर्टेण्ड रसेल ने कला :— फिलॉसफी सम्मानित हुयी। समस्त विश्व के शान्ति प्रिय विवेकशील समाज के इस चुनाव का अभिनन्दर किया हैं।

निष्कर्ष

अस्तु कहा जा सकता है कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम शिक्षक प्रतिनिधि के रूप में उभरकर सामने आये और देश के सर्वोच्च पद पर अपने आप को आसीन किया। जहाँ वे एक अच्छे दार्शनिक, शिक्षाविद्, शिक्षक, अध्यात्मवाद के पोषक, सर्वधर्म सद्भाव के संरक्षक व पाश्चात्य दार्शनिक विचारक प्लेटो अरस्तु, कास्ट, वर्गसन आदि के समर्थक थे। उन्होंने अपने कृर्तित्व व व्यक्तित्व से भारत में नये अध्याय का सृजन किया तथा भारतवासियों को शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन सोंच के लिए प्रेरित किया।

संदर्भ

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल : विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
2. चतुर्वेदी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद : डॉ. राधाकृष्णन एक जीवनी
3. चौबे, डॉ. सरजू प्रसाद : भारतीय शिक्षा दर्शन
4. गिजुभाई बधेका : ऐसे हो हमारे शिक्षक ,गीतांजली प्रकाशन, जयपुर
5. मनारिया : नैतिक शिक्षा, संघी प्रकाशन , जयपुर
6. डॉ. शुभ्रा : शिक्षा के रुप एवं सांस्कृतिक धरोहर, जैन प्रकाशन, जयपुर